Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019 Special Issue – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

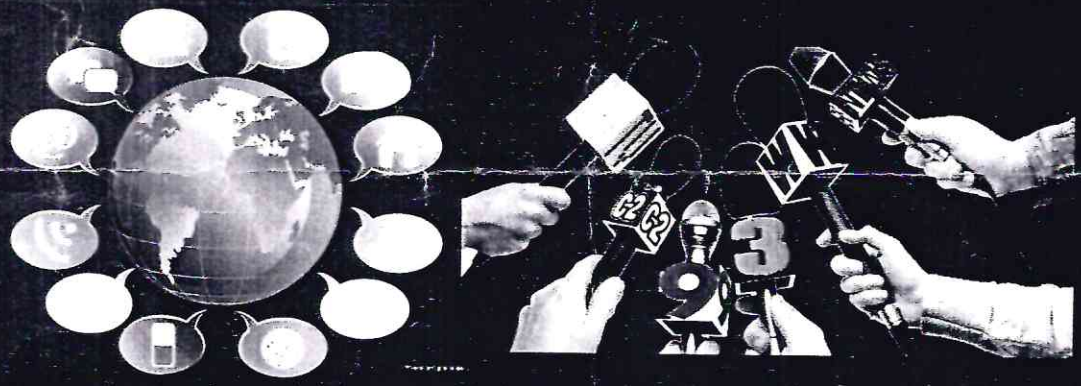

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of this Issue
Dr. Anil Kale
Asso. Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune

SHRI PADMAMANI JAIN COLLEGE
Pabal
Tal.Shirur,
Dist.Pune.

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
Visit to - www.researchjourney.net

38. सरकारी कार्यालय में हिंदी की आवश्यकता.....	डॉ.प्रविण तुळशीराम तुपे	118
39. जनसंचार एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता..... विज्ञापनों में हिंदी भाषा का सशक्त योगदान	कांचन शेंदुर्णीकर,	120
40. जनसंचार के माध्यम : विज्ञापन और हिंदी.....	डॉ.योगेश विठ्ठल दाणे	123
41. हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृष्य	डॉ. भाऊसाहेब नवले	127
42. मीडिया, समाज और हिंदी	डॉ. मिलिंद कांबळे	130
43. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	सौ. योगिता अमोल देशपांडे	132
44. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी	कु. छाया रत्नाकर पांढरकर	134
45. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं हिंदी अध्यापन	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	137
46. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	श्रीम. जयश्री अर्जुन माथेसुळ	139
47. हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ	प्रा.पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत	142
48. हिन्दी के विकास में नवइलैक्ट्रानिक माध्यमों का योगदान	आर. अरूणा	145
49. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	अश्विनी महादेव जाधव	148
50. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी भाषा (मुद्रित, श्रव्य, दृकश्रव्य माध्यम).....	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	150
51. इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम और हिंदी.....	सौ. विद्या शामराव चौगले	153
52. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	अंबेकर वसीम	156
53. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	प्रा. शोभा कोकाटे	159
54. जनसंचार माध्यमों में रेडियो	राजेंद्र विट्ठल वरप	161
55. विज्ञापन : जनसंचार का सशक्त माध्यम.....	प्रा. बी. एस भुजाडे	163
56. हिंदी के विकास में टेलिविजन का योगदान.....	सरला सूर्यभान तुपे	165
57. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी (मुद्रित, श्रव्य, दृक श्रव्य)	कविता दत्तु चव्हाण	167
58. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	अविनाश मारूती कोल्हे	170
59. जनसंचार माध्यम में हिंदी : रोजगार के अवसर	डॉ. शरद भा. कोलते	172
60. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	श्रीगीरे जयश्री बालाजी	175
61. जनसंचार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. रवीन्द्र सिंह	180
62. जनसंचार एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विविध आयाम–एक दृष्टि....	डॉ. प्रीति आत्रेय	183
★ 63. जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपादेयता.....	डॉ. भगत सारिका	185
64. हिंदी फिल्म, साहित्य व समाज	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	188
65. जनसंचार के माध्यम प्रिंट मीडिया के विकास में हिन्दी का योगदान.....	डॉ. अर्चना चतुर्वेदी	190
66. इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया और हिंदी	डॉ. नानासाहेब जावळे	192
67. नव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी ..... (कम्प्यूटर और इंटरनेट प्रणाली के विशेष संदर्भ में)	गणेश ताराचंद खैरे	195
68. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता..... (विज्ञापन के संदर्भ में)	प्रा. डॉ. मनाली सुर्यवंशी	198
69. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	प्रा. संदिप बळवंत देवरे	201
70. जनसंचार - माध्यम और सामाजिक जागरूकता.....	प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	203
71. भारत में हिंदी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. जालिंदर इंगले	206
72. अनुवाद : समकालीन संदर्भ में	डॉ. धन्या. के. एम	208
73. हिंदी जनसंचार माध्यम एवं रोजगार के अवसर.....	डॉ.राजाराम कानडे	210
74. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	213

SHRI PADMAMANI JAIN COLLEGE Tal.Shirur, Dist.Pune Pabal

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता
January 2019
ISSN- 2348-7143
UGC Approved No. 40705

जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपादेयता

डॉ. भगत सारिका
पाबळ, जि. पुणे

भारतीय संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रुप में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। राष्ट्रभाषा के रुप में तो हिंदी लोगों के दिलों में स्थान प्राप्त कर चुकी है। अब राजभाषा के रुप में पूर्णत: कार्यालयीन व्यवस्था में स्थान प्राप्त कर लेना जरूरी है। क्योंकि हिंदी अंग्रजी की तुलना में व्यवहारिक सेवा माध्यम और रोजगार की भाषा है। वर्तमान युग हिंदी भाषा के लिए अधिक चुनौती पूर्ण सिद्ध हो रहा है। जनसंचार माध्यमों के कारण बड़ी संख्या में हिंदी का विकास होता दिखाई देता है। जनसंचार माध्यमों ने हिंदी के प्रचार प्रसार में अपनी अहम् भूमिका निर्वाहित की है, इसमें कोई दो मत नहीं है। इसके बोलने और समझनेवालों की संख्या पचपन करोड़ से अधिक है। इसीलिए यदि संचार माध्यमों द्वारा किसी सूचना, संदेश या विचार को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना है तो भारतीय संदर्भ में हिंदी सर्वाधिक उपादेय है। हिंदी भाषा कई देशों में बोली समझी और सुनी जाती है। अमेरिका ने हिंदी की शिक्षा देने के लिए अपने बजट में विशेष प्रावधान किया है। भूमंडलीकरण में आज हिंदी का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। अत: इसे कंप्युटर की भाषा भी बनाया जा रहा है। वर्तमान युग में विदेशी भाषाओं में जैसे– अंग्रेजी, जर्मन, जपानी, फ्रेंच, आदि की तरह हिंदी भाषा भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निस्सन्देह महत्त्व प्राप्त कर चुकी है। हिंदी अध्ययनार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। अमेरिका, जपान, जर्मनी, मॉरिशस, इंग्लंड आदि विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन होने लगा है।

हिंदी को लोकप्रिय बनाया जनसंचार माध्यमों ने जिसमें टेलीविजन, रेड़िओ, हिंदी समाचारपत्र, पत्र पत्रिकाएँ, हिंदी सिनेमा, हिंदी गीत, ब्लॉग लेखन, विज्ञापन, पत्रकारिता, अनुवाद आदि। हिंदी प्रयोग के साथ ही सिनेमा और रेडिओ जनसंचार माध्यम आज सर्वाधिक रोजगार उपलब्धता का माध्यम भी है। भारत की राजभाषा और जनभाषा हिंदी है अत: रेडिओ तथा सिनेमा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व भी हिंदी भाषा ही करती है। हिंदी फिल्में इतनी लोकप्रिय है कि भारत सहित विश्व के २२ देशों के महत्त्वपूर्ण थियेटर्स , मल्टिप्लेक्स में एक साथ रिलीज होती है। और अच्छी कमाई करती है। पद्मावती सिनेमा इसका उदाहरण है। विदेशों में बी. टेक, एम. बी. ए आदि की डिग्री करने के बाद अंग्रेजी के नवयुवक और नवयुवतियाँ धनाढय घरों से आकर मुम्बई में हिन्दी सीख रहे हैं। फिल्मों में काम ढूँड रहे हैं। अभिनेताओं के पुत्र पुत्रियाँ इसके उदाहरण है। सफलता की दृष्टि से हिंदी का महत्त्व जानकर कटरिना कैफ जैसी अभिनेत्री हिंदी फिल्मों में काम करने के लिए हिंदी सीखती है। कितने विदेशी कलाकार, गायक मुंबई में हिंदी फिल्मों में काम करने के लिए लालायित हैं। फिल्मों में कहानी लेखन , गीत, संवाद–लेखन जाननेवाले साहित्यकारों की उतनी आवश्यकता नहीं होती जितनी सामान्य हिंदी जाननेवाले और जनता की नब्ज पकड़नेवालों की आवश्यकता होती है। फिल्मी जगत में हिंदी का वर्चस्व दिखाई देता है।

आज के विज्ञान और तकनीकी युग में संचार माध्यमों का महत्त्व दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यमों में सिनेमा एक सशक्त माध्यम है जो हमारे जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। सिनेमा के पास अभिव्यक्ति के जितने उपकरण है। सिनेमा में मानवीय जीवन की विविध झाँकियाँ दृश्यमान होती हैं, हर एक व्यक्ति अपनी अपनी दृष्टि से अपने जीवन की झलक उसमें देखता हैं। फिल्म का निर्देशक और निर्माता बड़ी रचनाशीलता से यथार्थ तथा कल्पना का संगम करके समाज के सामने उस परिवेश को दृश्यात्मक रूप में पहुँचा पाता है। साहित्यकार के संवेदनशील लेखन से भी प्रभावी माध्यम फिल्म रही है। जो लोगों के दिल तक पहुँचने में कम समय लेती हैं। फिल्म उदयोग में हिंदी भाषा का अध्ययन एवं अनुसंधान करनेवालों के लिए इसमें रोजगार तो है लेकिन केवल भाषा का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। उसके लिए सिनेमा की समझ होना भी आवश्यक है। हिंदी साहित्य का अध्ययन करनेवाला छात्र सिनेमा के क्षेत्र में पटकथा लेखक, गीतकार तथा अभिनेता अथवा अभिनेत्री बन सकता है। फिल्मों में गीत लिखने का कार्य भी मिल सकता है। परंतु लिखने की कला होनी चाहिए। गीतकार के रूप में कार्य करने के लिए अच्छी कविता लेखन आना आवश्यक है। भारतीय फिल्मे दुनियाभर के लिए आश्चर्य का विषय है। भारत में विश्व का सबसे बड़ा फिल्म उदयोग है। भारत में हरसाल बननेवाली फिल्मों की संख्या अमरिका में बननेवाली फिल्मों की तुलना में दो गुना अधिक है।

टेलीविजन के क्षेत्र में भी हिंदी पर पकड़ रखनेवाले सृजनशील छात्र के लिए रोजगार की कोई कमी नहीं। एक समय था जब लोग मानते थे कि अकेला दूरदर्शन भला कितनों को रोजगार देगा और विदेशों से लाँच किए गए चैनलों में हिंदी या देशी भाषा – भाषियों के लिए रोज़गार की संभावना कहाँ ! समय के साथ यह मिथक भी टूटे। कह सकते हैं कि इसकी शुरूआत 'स्टार' के असफल पदार्पण में निहित है। 'स्टार' का पदार्पण में असफल होना उसके मालिक को धक्का दे गया। मीडिया गुरू रूपर्ट मरडॉक यह मानने के लिए विवश हो गए कि स्टार जैसा अमरिका का नंबर वन चैनल भारत में तभी चल पायेगा जब इसके कार्यक्रम हिंदी में होंगे। इसी

कारण उनके असफल स्टार की गाड़ी चल पड़ी । अब तो प्रादेशिक भाषाओं की महिमा पहचानकर स्टार के कार्यक्रम हर प्रदेश में क्षेत्रीय भाषा और मिट्टी की महक के साथ प्रसारित किये जाते हैं।

आजकल विदेशी चैनलों की भरमार है, इन विदेशी चैनलों पर कई विदेशी धारावाहिक , फिल्में आदि को हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में अनूदित किया जाता है। हिस्ट्री, नैशनल जिओग्राफीक, डिस्कवरी, ॲनिमल प्लॅनेट आदि कई चैनलों के सारे के सारे कार्यक्रम हिंदी में डब किए हुए हैं। अर्थात अनुवाद के माध्यम से रोजगार का क्षेत्र भी उपलब्ध हो गया है।

दिन ब दिन बड़ी हस्तियाँ ब्लॉग लेखन के साथ जुड़ रही हैं। बिना-किसी मध्यस्थ के सीधे जनता के साथ जुड़ने में नेता, अभिनेता, गायक, खिलाड़ी ब्लॉग लेखन को अच्छा खासा माध्यम मान रहे हैं। और आगे ब्लॉगिंग का प्रचलन बढ़नेवाला है, उसके लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता भी बढ़गी जो अत्यंत औपचारिक है, साथ ही निम्न से निम्न समाज के व्यक्ति के साथ जुड़ती हो इसके लिए हिंदी से अधिक प्रचलित और सभी को समझने के योग्य भाषा कौनसी हो सकती है। और इसके लिए ब्लॉंग लेखन करनेवाले हर एक को हिंदी भाषा को समझना और सीखना आवश्यक है।

हिंदी के प्रति अब लोगों की दृष्टि बदलने लगी हैं। अब तक अंग्रेजी इसलिए पढ़ी जाती थी क्योंकि उसे रोजगार दिलाने में सहायक माना जाता था। अब स्थिति बदलती जा रही है। हिंदी भी रोजगार से जुड़ रही है। इस दौर में सर्वाधिक अखबार हिंदी के बिक रहे हैं। हिंदी चैनल देखनेवालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। रेड़िओ के माध्यम से सुंदर शब्दावली में अपनी बात जनमानस तक पहुँच रही है। इन तीनों माध्यमों से हिंदी वाले बड़ी संख्या में रोजगार हासिल कर रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में हिंदी विषय ने अपने प्रतियोगियों का बेड़ा पार किया । विदेशों में हिंदी के प्रति रूंझान बढ़ रहा है। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है।

हिंदी भाषा से बाजार की संभावनाएँ जाग उठी है। विदेशी कंपनियों को अपने उत्पाद भारत में बेचने के लिए जनमानस की भाषा हिंदी में प्रचार प्रसार तथा विज्ञापन करना जरूरी हो गया है। और हिंदी भाषियों तक उत्पाद की गुणवत्ता बताने के लिए उन्हें वही अधिकारी तैनात करने पड़ रहे हैं जो हिंदी जानते हैं। कई अंग्रेजी चैनलों ने इसी बाजार के प्रभाव के कारण अंग्रजी को बदलकर हिंदी को अपनाया । सरकारी कामकाज में हिंदी का बोलबाला बढ़ रहा है। हिंदी केवल साहित्य की भाषा न रहकर विज्ञान तकनीक, वाणिज्य, जनसंचार आदि क्षेत्रों की भाषा हो गयी है। देश में मीड़िया के बढ़ते प्रभाव और लगातार आते नए चैनलों ने हिंदी का अच्छा ज्ञान रखनेवाले विद्यार्थियों के लिए एक बड़ा अवसर सामने आया है। देश – विदेश में फैला यह जाल हिंदी के छात्रों को कई तरह से काम करने के मौके देता है।

आधुनिक युग में कंप्यूटर का असाधारण महत्त्व तो हम जानते ही हैं। हिंदी भाषा में कंप्यूटर पर शब्द संसाधन करके पुस्तक, शोध प्रबंध, पत्र–पत्रिकाएँ, आमंत्रण पत्र, विजिटिंग कार्ड, विज्ञापन, ले–आऊट जैसे अनेक कार्य किए जा सकते हैं। कंप्युटर के अनेक प्रोग्रामों में हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाओं का इस्तेमाल किया जाता है। इससे हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाओं में टंकण करना , शब्द संसाधन करना , कंप्यूटर को निर्देश देना आसान हो गया है। इंटरनेट पर भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है। ' विकिपीडिया ' नामक इंटरनेट ज्ञानकोश एक बहुभाषीय प्रकल्प है। यह एक ऐसा जाल पृष्ठ है जो सभी को इसका संपादन करने की छूट देता है। जिसको भी इंटरनेट का ज्ञान है वह विकिपीडिया पर लिख सकता है और लेखों का संपादन कर सकता है।

रेडिओ संचार माध्यम को एफ.एम चैनलों ने काफी लोकप्रिय किया है। चौबीसों घंटों चलनेवाले कई एफ.एम चैनल खासकर युवावर्ग में बहुत लोकप्रिय है। दूरदर्शन हो आकाशवाणी हो टीवी हो या एफ.एम चैनल, कार्यक्रमों और विज्ञापनों के क्षेत्र में अपना वर्चस्व हिंदी ने स्थापित किया है। रेडिओ और टीवी के समाचारों और विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रमों से जो विज्ञापन आते हैं, उसमें से कुल ७६ प्रतिशत विज्ञापन हिंदी में होते हैं। रेडिओ और दूरदर्शन के लिए काम करनेवालों की मासिक आय भी लाखों में पहुँच गयी है। संवाददाता, समाचार संपादक, निवेदक, उद्घोषक, संचालक , निर्माता आदि पदों पर काम करनेवालों की मासिक आय लाखों में पहुँच गयी है। हिंदी की लोकप्रियता और रोजगार क्षमता का यह प्रमाण है कि बी.बी.सी और सी.एन.एन जैसे बड़े विदेशी और बहुदेशीय चैनलों ने अपने हिंदी चैनल खोल लिये हैं।

हिंदी संचालन की बात की जाए तो 'सोनी' चैनल के के.बी.सी कार्यक्रम के माध्यम से अभिनेता अमिताभ बच्चनजी का हिंदी संचालन काफी लोकप्रिय हो गया हैं।

देश भर में फैले सैकड़ों विश्वद्यिालयों के साथ ही विश्व भर के लगभग १०० विश्वविद्यालयों में आज हिंदी पढ़ाई जाती है। लोग यह पढ़ाई सिर्फ भाषा वैज्ञानिक आधारपर या शौकिया ही नहीं करते , हिंदी की उपयोगिता को परखने के बाद ही विश्व भर में आज हिंदी को २१ वीं सदी की भाषा कहा है। अंग्रेजी भले ही दुनियाभर की तरह भारत में भी व्यापार व्यवसाय की मुख्य भाषा बन गई हो, लेकिन जनभाषा के रूप में हिंदी की अपनी एक अलग महत्ता है।

उपसंहार — भाषा का वास्तविक प्रयोगशाला समाज होता है। हिंदी भाषा का प्रयोग जिस समाज में हो रह है वह निश्चित रूप से विशाल है। जिसमें टेलीविजन, रेड़िओ, समाचारपत्र, अनुवाद, पत्रकारिता, विज्ञापन संगणक, ने अपनी अहम भूमिका निर्वाहित कर हिंदी को ज्ञान के क्षेत्र के साथ विज्ञान के क्षेत्र से भी जोड़ा है हिंदी का प्रयोग साहित्य क्षेत्र के अलावा प्रयोजनपरक क्षेत्रों में बॅकिंग, वाणिज्य, व्यवसाय, ज्ञान विज्ञान के साथ ही तकनीकी, कंप्युटर के क्षेत्र में प्रयुक्त होकर आज विश्वबाजार भारत की ओर आकृष्ट हो गया है। जनसंचार माध्यमों में हिंदी अपना वर्चस्व प्राप्त कर चुकी है। ऐसे में हिंदी को रोजगारोन्मुख बनाकर, नवीनतम पाठ्यक्रमे का अध्यापन विश्वविद्यालयीन स्तरों पर किया जाना अत्यंत आवश्यक हो गया है ताकि हिंदी रोजगार से जुड़ सके । हिंदी का अध्यापन करके सिर्फ अध्यापक बनने की अपेक्षा अन्य क्षेत्रों में सेवा के अवसर उपलब्ध हो सके तथा हिंदी अध्यापकों का कर्तव्य है कि वे हिंदी अध्यापन के साथ छात्रों को नई स्थिति से , चुनौति से परिचित कराए। हिंदी की सरकारी नीति इसप्रकार होनी चाहिए कि पूरे भारतवर्ष में व्यावसायिक हिंदी का तीव्रगति से अध्ययन व अनुसंधान हो, जिससे जनता हिंदी को रोजी रोटी की भाषा होने से सहज स्वीकारेंगी तथा वह शासन व प्रशासन में यथोचित प्रयुक्त हो सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ —

१. राजभाषा हिंदी विविध आयाम — डॉ. शंकर बुंदेले
२. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे रोजगार की संभावनाएँ — डॉ. भारती गोरे (रोजगारभिमुख हिंदी : दिशाएँ एवं संभावनाएँ)
३. आकाशवाणी और हिंदी रोजगार के अवसर — डॉ. सुनील देवधर (रोजगारभिमुख हिंदी : दिशाएँ एवं संभावनाएँ)

SHRI PADMAMANI JAIN COLLEGE Pabal Tal.Shirur, Dist.Pune

PRINCIPAL
Shri Padmamani Jain
Arts & Commerce College
Pabal,Tal.Shirur,Dist.Pune.412403